सुथरे शाह जी का आविर्कालीन भारत

इस दिव्य धरा पर जब 'सुथरा' आया,
ध्यान लगा देखा उसने भारत उजड़ा पाया।

आज से ३९४ वर्ष पूर्व सम्वत् १६७२(सन् १६१५) को जब सुथरे शाह जी (जलज्योती शाह जी) का प्रादुर्भाव हुआ तो भारत की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। कुराज्य का बोलबाला था। भारतीय संस्कृति का गौरवमय भविष्य अंधकार के सींकचों में तड़प रहा था। १६वीं, १७वीं शताब्दी का भारत जब राजनैतिक कुचक्रों, सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक आडम्बरों तथा अन्धविश्वास का शिकार बना तथा यवनों ने विजय के उन्माद में अत्याचारी दानवों का रूप धारण कर लिया तब छोटे-छोटे हिन्दू राजा पारस्परिक फूट, वैमनस्य, विलासिता के कारण अपना-अपना अस्तित्व खोने लगे। वर्णाश्रम के पवित्र सिद्धान्त में आई हुई बुराइयों की दीमक ने हिन्दू जाति को खोखला बना दिया। ब्राह्मण और शूद्र परस्पर ईर्ष्या-द्वेष और शत्रुता में अपने कर्तव्य को भूल गए। जो तलवार और सैन्य शक्ति का धनी होता था वह शासक बनने का सपना देखने लगता था। निःसंदेह ऐसे विषम वातावरण में यदि सुथरे शाह जी का प्रादुर्भाव न होता तो देश की धार्मिक दशा अत्यन्त विचित्र होती तथा चारों ओर अशान्ति का साम्राज्य छा जाता। हिन्दू समाज की क्या दशा होती? इसकी कल्पना मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

१७वीं शताब्दी तक मुगलकाल की जड़ें भारत में जम चुकी थीं। दिल्ली के मुसलमान काजियों ने यह हुक्म जारी कर दिया कि जो भी हिन्दू जनेऊ पहनकर घर से बाहर निकले उसके जनेऊ को कोई भी मुसलमान दाँतों से काट दे और जो हिन्दू टीका लगाकर बाहर निकले उसका टीका चाट ले।

जो स्त्री धोती बाँध कर बाहर निकले उसकी धोती अगर कोई मुसलमान

उतार दे तो हकूमत इसकी जिम्मेदार नहीं होगी। हिन्दुओं की यह दशा केवल दिल्ली में ही नहीं अपितु दूसरे शहरों में भी थी। शरारती मुसलमान हिन्दुओं का तिलक चाट लेते और जनेऊ काट देते।

इसी प्रकार मुसलमान लोभ-लालच, छल-कपट, बलबर्बरता आदि अनेक अमानवीय एवं घृणित उपायों का अवलम्बन कर हिन्दू धर्म पर अत्याचार करने लगे और उन्हें जबरन मुसलमान बनाया जाने लगा। परिणामस्वरूप हिन्दू जाति का ह्रास होने लगा। मुसलमानों के अत्याचारों से ग्रस्त स्त्री को चारदीवारी में बन्द कर दिया गया। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा गया। पर्दाप्रथा, बाल-विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों ने जन्म लिया। कई जगहों पर लड़कियों को जन्म लेते ही मार दिया जाने लगा। बहुत सारे हिन्दू इसे अपना धर्म भ्रष्ट समझते थे। कई गरीब घरों की स्त्रियाँ जो धोती बाँध कर यमुना में स्नान करने जातीं, कई शरारती उनकी धोती खींच लेते थे। वो बेचारीं शर्म से वहीं सिमट कर बैठ जातीं।

इस तरह हिन्दुओं की दशा बहुत बुरी होती जा रही थी। हिन्दू बेचारे डरे और सहमे हुए जीवन व्यतीत कर रहे थे। सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुन देव जी को जहाँगीर ने लाहौर में बुलवाया और २९ मई सन् १६०६ के अनुसार (ज्येष्ठ शुदि चौथ सम्वत् १६६३) रावी नदी के निकट कष्ट दे देकर शहीद किया गया। लाहौर जाने से पहले गुरु जी ने अपने सुपुत्र श्री हरगोबिन्द राय जी को अपने स्थान पर गुरु गद्दी का तिलक लगाया। श्री गुरु अर्जुन देव जी की शहीदी के उपरान्त गुरु मर्यादा के अनुसार सेली तथा माला फकीरी के चिह्न धारण करने की जगह श्री हरगोबिन्द साहिब जी ने दो तलवार एक दाएँ और एक बाएँ धारण की। इसका कारण उन्होंने बताया कि अब भक्ति के साथ शूरवीरता के चिह्न धारण करना जरूरी है। सेली तथा माला अपनाने का अब यह समय नहीं रहा। इस तरह गुरु हरगोबिन्द साहिब जी को मीरी तथा पीरी का शहनशाह कहा जाने लगा।

ऐसे विषम वातावरण में मीरी पीरी के शहनशाह श्री हरगोबिन्द साहिब जी महाराज के मानस पुत्र श्री सुथरेशाह जी ने मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों से मुक्ति दिलाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने काज़ी के पास जाकर विनती की कि पंडितों एवं हिन्दुओं पर जो अत्याचार हो रहा है वो बहुत बुरा है। आखिर वे भी भगवान के बनाए इन्सान हैं। उनके साथ इन्सानों जैसा व्यवहार होना चाहिए । काज़ी ने पूछा-'साईं जी, आप कौन है? हिन्दू हो या मुसलमान?' सुथरे शाह जी ने कहा-'मैं न हिन्दू हूँ, न मुसलमान हूँ। भगवान ने मुझे इन्सान के रूप में दुनिया में भेजा था। इसलिए न मैं हिन्दू बन सका न मुसलमान। भगवान एक है, वह सारे जहाँ को बनाने वाला है। उसके कानून और उसके फरमान सारे संसार और इंसानों के लिए एक है और वह है इन्सानियत। कोई ठीक तरीके से उसको याद करे, उसके साथ मोहब्बत करे, वो उनका बन्दा है। उसका कोई कानून नहीं कि उसे किसी खास तरीके से ही खुश कर सके। हर इन्सान के साथ प्यार हमदर्दी करना यह इंसानी धर्म है।' श्री गुरु नानक देव जी ने कहा है –

अव्वल अल्ला् नूर उपाया कुदरत दे सब बन्दे ।
एक नूर ते सब जग उपजया कौन भले कौन मन्दे ।।

सुथरे शाह जी (जल ज्योतिशाह जी) द्वारा जो आध्यात्मिक विकास, करामातें, औरंगजेब द्वारा हिन्दुओं के जनेऊ न तोड़ने का वचन, आदि जो कार्य किए उसका पूर्ण परिचय तो इस संत के पूर्ण जीवनवृत्त को जानने के बाद ही मिलेगा। हमारे देश के धर्म व संस्कृति के रक्षक के रूप में जिन महापुरुषों की गणना होती है उनमें बाबा सुथरेशाह जी (जल ज्योतिशाह जी) का नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है ।